B.A Part-1 (Psy. Subsidiary) Topic- Classical conditioning
Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Deptt. of Psychology, Vaishali Mahila College Hajipur)

अनुबंधन

(Conditioning)

जेम्स ड्रेवर (1968)) के अनुसार, "अनुबंधन वह प्रक्रिया है, जिसमें एक उत्तेजना वस्तु अथवा परिस्थिति के द्वारा एक प्रत्युतर प्रकट होता है, इसके अतिरिक्त यह प्रत्युत्तर एक प्राकृतिक अथवा सामान्य प्रतियुत्तर है।"

सरलतम रूप में यदि हम देखें तो उत्तेजना एवं अनुक्रिया के बीच साहचर्य स्थापित होना ही अनुबंधन है। प्रायोगिक संक्रियाओं के आधार पर अनुबंधन के दो प्रकार हैं- प्राचीन

अनुबंधन (classical conditioning) तथा नैमित्तिक अनुबंधन (Instrumental conditioning)।

प्राचीन अनुबंधन (Classical conditioning)

प्राचीन अनुबंधन के मुख्य योगदानकर्ता Pavlov हैं, जिन्हें अनुबंधन का पिता (father of conditioning) कहा जाता है। Pavlov ने इस विधि पर कार्य करने हेतु विभिन्न प्रयोग किए जिसमें सबसे महत्वपूर्ण प्रयोग कुत्ते पर किया गया। Pavlov ने अपने प्रयोग के लिए लकड़ी का एक ऐसा उपकरण तैयार किया जिसमें कुत्ते को खड़ा किया जा सके। कुत्ते के लिए इस प्रकार की व्यवस्था की गई थी

कि आवश्यकता पड़ने पर एक निश्चित समय और अवधि के लिए कुत्ते के सामने भोजन लाया जा सके। इस उपकरण में घंटी बजाने तथा भोजन प्रस्तुत करने के लिए त्वरित बटनों का प्रयोग किया गया था। Pavlov ने कुत्ते की लार ग्रंथि में एक नली लगा दी थी जिससे कुत्ते की लार उचित स्थान पर रखें एक बीकर में एकत्रित किया जा सके। यह संपूर्ण उपकरण एक ध्वनि अवरोधी कक्ष में रखा गया और कुत्ते को उस में खड़ा किया गया।

परीक्षण के लिए कुत्ते को पहले एक निश्चित समय पर भोजन का बटन दबाकर भोजन दिया गया। भोजन सामने आते ही कुत्ते की

लार निकलने लगी। इस स्थिति में भोजन ने कुत्ते के लिए एक स्वाभाविक उद्दीपक (US) का कार्य किया तथा लार आना उसकी स्वाभाविक अनुक्रिया (UR) थी।

प्रयोग के अगले चरण में दूसरे दिन Pavlov ने केवल घंटी का बटन दबाया। घंटी की आवाज सुनकर कुत्ते ने कान तो खड़े किए किंतु लार नहीं निकाली। इस स्थिति में घंटी की ध्वनि लार टपकाने वाली क्रिया के लिए अस्वाभाविक उद्दीपन था अतः लार नहीं निकली।

तीसरे दिन Pavlov अपने घंटी का बटन दबाने के तत्काल बाद भोजन का बटन दबा दिया।

इस प्रकार घंटी की ध्वनि तथा भोजन की प्रस्तुति दोनों क्रियाएं कुत्ते के सामने साथ साथ हुई। इसका परिणाम यह हुआ कि कुत्ते ने कान भी खड़े किए और लार भी टपकायी। Pavlov ने घंटी तथा भोजन दोनों के बटन एक साथ दबाने की क्रिया को कई दिनों तक दोहराया और देखा कि कुछ दिनों के बाद भोजन लाए बिना भी घंटी बजते ही कुत्ते की लार निकलने लगती थी। Pavlov के अनुसार इस अंतिम स्थिति में कुत्ता घंटी की आवाज से भोजन प्राप्त करने के लिए अनुबंधित हो गया था। इस प्रकार कुत्ता सीख गया था कि जैसे ही घंटी की आवाज होगी भोजन उसके सामने आ जाएगा। सीखने की

इस प्रक्रिया में भोजन उद्दीपक के रूप में, लार टपकाना स्वाभाविक क्रिया तथा घंटी से भोजन आने के लिए आश्वस्त होना अनुबंधन के रूप में कार्य करता है।

इस संपूर्ण प्रक्रिया या अनुबंधन को इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं-

पहली अवस्था- प्रशिक्षण से पहले

CS (घंटी)----भोजन------UR (लार)

दूसरी अवस्था- प्रशिक्षण के बाद

CS (घंटी)-----UR (लार) अनुबंधन स्थापित हो गया।

अर्थात घंटी बजने के बाद तथा भोजन देने से पूर्व ही कुत्ता लार टपकाने लगता था। इस

प्रकार प्राचीन अनुबंधन में दो प्रकार की उत्तेजनाएं व अनुक्रियाएं देखने को मिली। CS तथा UCS अर्थात conditioned stimulus तथा unconditioned stimulus तथा दूसरी तरफ CR तथा UCR अर्थात conditioned response तथा unconditioned response।